

अनौपचारिक शिक्षा में राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान

प्रवीण कुमार

<https://doi.org/10.61410/had.v21i3.353>

मनुष्य के जन्म से प्रारंभ होने वाली शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य को पशुओं से अलग करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण योगदान है। जिसके द्वारा मनुष्य, पशुओं से एक अच्छी परिस्थिति का निर्माण करता है। औपचारिक शिक्षा के साथ अनौपचारिक शिक्षा इस अच्छी परिस्थिति का निर्माण करने में महत्वपूर्ण सीढ़ी है।

बिना दीवारों की खुली पाठशाला, यहाँ मिले लाखों गुरु।

पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों से, आओ, बातें करें शुरू।।

प्रत्येक दिन जीवन व्यवहार में, समाज में, प्रकृति में रहते हुए हम जो अनुभव प्राप्त करते हैं, इससे हमारे व्यवहार का स्वरूप स्पष्ट होता है, उसे शिक्षा द्वारा विचार प्राप्त होते हैं। अपना जीवन दर्शन, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत व्यवहार तथा समाज के साथ संबंधों का स्वरूप सुनिश्चित करने में शिक्षा सहायक होती है। शिक्षा के साथ ही समाज की संस्कृति का भी विकास होता है। समाज का स्तर भी इस पर आधारित है। परिवार इसी समाज का एक लघु स्वरूप है तथा ऐसे कई परिवारों से मिलकर समाज का निर्माण होता है। मनुष्य की अनौपचारिक शिक्षा परिवार के पारस्परिक संबंधों से होता है। मनुष्य की अनौपचारिक शिक्षा परिवार के पारस्परिक संबंधों से होती है। इसीलिए परिवार संस्था को पहली शिक्षा संस्था माना जाता है।¹

शिक्षा की सबसे स्पष्ट एवं सटीक व्याख्या है कि शिक्षा व्यवहार में परिवर्तन है। शिक्षा मनुष्य में योग्य परिवर्तन लाने वाले विचारों को प्रवृत्त करने वाली, पूर्वग्रह विरहित दृष्टि देने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म के पश्चात् जिन-जिन संस्थाओं में व्यवहार करता है। जिन घटकों से उसका संबंध होता है, उससे उसे कुछ न कुछ अनुभव प्राप्त होता है एवं उन अनुभवों के आधार पर व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन होता रहता है। व्यक्ति के जिन अनुभवों में निश्चितता, व्यवस्थित रूप, पूर्व नियोजन एवं संगति नहीं होता, शिक्षा देने का कारण नहीं होता, शिक्षा ग्रहण करने वाले को मैं सीख रहा हूँ एवं शिक्षा प्रदान करने वाले को मैं सीखा रहा हूँ इसका ज्ञान नहीं होता, उस अनुभव द्वारा प्राप्त शिक्षा को अनौपचारिक शिक्षा तथा इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को अनौपचारिक शिक्षा संस्था कहा जाता है। परिवार, जाति व्यवस्था, संस्कृति, शासन, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, भाषा, आकाशवाणी, साहित्य, समाचार पत्र इत्यादि सभी अनौपचारिक शिक्षा संस्थाएं हैं। इन संस्थाओं द्वारा कभी-कभी संस्कार विकसित करने के लिए बुद्धिमतापूर्वक प्रयास भी किए जाते हैं, परंतु शिक्षा देना यह इन संस्थाओं का मूलभूत उद्देश्य नहीं है। इन संस्थाओं द्वारा होने वाले संस्कारों में एकरूपता और क्रमता नहीं होता है। अनौपचारिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त शिक्षा स्वाभाविक एवं प्राकृतिक होने से उसमें जीवतता एवं वास्तविकता होता है, परंतु सुनिश्चित लक्ष्य एकसूत्रता, नियोजन और पद्धति इत्यादि का अभाव होने से वे व्यवस्थित एवं व्यवस्थित स्वरूप में नहीं प्राप्त हो पाता है।²

- सहायक आचार्य (सं), शिक्षा विद्याशाखा, उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

व्यक्तित्व विकास हेतु शिक्षा की मूलभूत आवश्यकता है। इसमें विद्यालयीय शिक्षा के साथ अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होना आवश्यक है। यह शिक्षा समाज के सभी स्त्री-पुरुष के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि ऐसी शिक्षा द्वारा जीवन मूल्यों के संस्कार मिलते हैं। विविध उपक्रमों एवं नैमित्तिक कार्यक्रमों द्वारा श्रम प्रतिष्ठा, व्यवस्थितता, समय की महत्ता, सौजन्यशीलता, स्त्री-पुरुष समानता, राष्ट्रीय एकता, सर्वधर्म सहिष्णुता, संवेदनशीलता, राष्ट्रभक्ति भाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण इत्यादि मूल्यों का अंकुरण किया जा सकता है।³

शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए 2001 के नोबेल पुरस्कार विजेता और संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव श्री कोफी अन्नान के शब्दों में “ज्ञान ही शक्ति है, सूचना मुक्ति है और यह हर समाज, हर परिवार में प्रगति का आधार है।” इसी संदर्भ में नेल्सन मंडेला ने भी कहा कि शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग दुनिया को बदलने हेतु किया जा सकता है।⁴ शिक्षा एवं कौशल विकास में निवेश किसी अन्य क्षेत्र या संसाधन में निवेश की तुलना में सर्वाधिक प्रतिफल देने वाला निवेश कहा जा सकता है। यूनेस्को की ई एफ ए ग्लोबल मॉनीटरिंग प्रतिवेदन 2009 के अनुसार, “एक व्यक्ति द्वारा शिक्षा पर किए गए प्रत्येक एक अमेरिकी डॉलर व्यय या निवेश के बदले उसके सक्रिय कार्यशील जीवनकाल में लगभग 10 डॉलर का प्रतिफल प्राप्त होता है।”⁵

किसी भी देश और समाज की उन्नति तथा विकास उस देश के नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल विषय ज्ञान देना नहीं होता बल्कि उसका मार्गदर्शन और चरित्र निर्माण के साथ-साथ उसे आर्थिक रूप से सशक्त बनाना भी होता है। शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक मूल्यों के विकास में मदद करती है। शिक्षित नागरिक ही देश और समाज की बेहतरी और विकास के बारे में सोच सकता है और एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था के निर्माण और विकास में मदद कर सकता है।⁶ मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा के गैर भारतीय और मशीनी स्वरूप को लेकर महात्मा गांधी के मन में गहरी पीड़ा थी। उन्होंने दिनांक 1 सितंबर, 1921 के ‘यंग इंडिया’ में लिखा “अन्य देशों के बारे में कुछ भी सही हो, कम से कम भारत में तो जहाँ अस्सी फीसदी जनसंख्या खेती करने वाली है और दूसरी दस फीसदी उद्योगों में काम करने वाली है, शिक्षा को केवल साहित्यिक बना देने तथा लड़कों और लड़कियों को शेष जीवन में हाथ के काम के लिए अयोग्य बना देना गुनाह है, क्यों एक किसान का बेटा किसी स्कूल में जाने के बाद खेती के मजदूर के रूप में निकम्मा बन जाए। हमारी पाठशालाओं के लड़के शारीरिक श्रम को तिरस्कार की दृष्टि से चाहे न देखते हों पर नापसंदगी की नजर से तो जरूर देखते हैं।” गांधी जी की श्रम के प्रति चिंता, वर्तमान समय में छात्रों में प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होती है। आधुनिक समय में शिक्षित युवा किसी भी प्रकार शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखते हैं और ऐसे कार्य करने में अपने को अपमानित महसूस करते हैं।

प्राचीन समय में भारत को विश्व गुरु की पदवी प्राप्त थी। सम्पूर्ण विश्व का भारत ने मार्गदर्शन किया। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे शिक्षा केन्द्रों ने विश्व को नई दिशा दी। जिसका कारण मूल्यों और संस्कारों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था थी, जिसमें मानवीय मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास का आकलन मात्र संसाधन एकत्र करने से नहीं होता, अपितु वहाँ के नागरिकों द्वारा प्रयोग में लाने वाली पद्धतियों, संस्कारों, मूल्यों, कार्यशालियों से राष्ट्र का निर्माण होता है।

वर्तमान समय में विश्व के सबसे युवा राष्ट्र की संज्ञा भारत को दिया जा रहा है। विश्व समुदाय को भारतीय युवाओं में विशिष्ट ऊर्जा का पुंज प्रकाशित दिख रहा है। युवा राष्ट्र के रूप में हमारे पास युवाओं की असीम शक्ति है। इस युवा शक्ति का सार्थक सदुपयोग किस प्रकार किया जाय। वर्तमान भारतीय परिवेश में यह समस्या अत्यधिक विकट है। इस युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करने हेतु युवाओं को संस्कारित करना होगा। यह कार्य राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से सशक्त रूप से किया जा सकता है। यह योजना 17 वर्ष से 35 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं से सीधे जुड़ी है।

विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका की जितनी जनसंख्या है, उससे अधिक भारत में छात्रों की संख्या है। युवा छात्रों के रूप में हमारे पास विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति है। यदि इस युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण दिशा में मोड़ने में सक्षम हुए, तो भारत विश्व में एक बार पुनः प्राचीन गौरव को प्राप्त करेगा एवं 21 वीं सदी में नये युग का सूत्रपात करते हुए पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के सपनों को साकार कर सकेगा। भारत को वैश्विक महाशक्ति के रूप में विकसित करने से विश्व गुरु की पदवी पर पुनः स्थापित हो सकेगा।

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में समुदाय की सहभागिता एक पूर्व शर्त है। शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता का विचार भारत में प्राचीन काल से है। प्रारम्भ में गुरुकुल, पाठशाला, मदरसा एवं मकतब सामुदायिक संस्थाओं के रूप में विकसित हुए और समुदाय के सहयोग से सफलतापूर्वक संचालित होते रहे। समाज में उपलब्ध ज्ञान एवं कौशल का संचार एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से स्थानान्तरित किया गया। ब्रिटिश शासनकाल में शिक्षा की बढ़ती औपचारिकता एवं सरकार की बढ़ती भूमिका के बीच समुदाय एवं विद्यालय के बीच का संबंध कमजोर हो गया जो क्रमशः स्वतंत्रता प्राप्ति तक बढ़ता ही गया। स्वतंत्रता के पश्चात् शिक्षाशास्त्रियों, एवं नीति नियन्ताओं के लिए समुदाय को विद्यालय से जोड़ना एक महत्पूर्ण चुनौती है।

छात्रों के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी है, क्योंकि इसके माध्यम से हम शिक्षित युवा वर्ग को जनसाधारण के निकट ले जाने में सफल होंगे। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मैकाले द्वारा लागू की गयी शिक्षा व्यवस्था पर ही संचालित हो रही है। जिसमें शिक्षा व्यवस्था का मूल उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों को शासन के लिए तैयार करना था, जो रंग से काले हों, लेकिन हृदय गोरों का हो। ब्रिटिश शासन को इसमें सफलता भी मिली तथा देश का शिक्षित वर्ग अपने को शेष समाज से अलग एवं ऊपर मानने लगा। समाज भी इन्हें अभिजात वर्ग के सहायक के रूप में देखता है। परिवार में जिस बच्चे को शिक्षा दी जाती है, उसका लालन-पालन अन्य बच्चों से भिन्न प्रकार का होता है एवं शिक्षा व्यवस्था भी ऐसी है कि यदि बच्चे ने स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा प्राप्त की, तो जीवन के कम से कम 19 वर्ष तक वह समाज की मूलधारा से अलग सा रहता है, उसकी शिक्षा समाप्त जब होती है, तो वह वास्तविक जीवन में प्रवेश करता है, तो समाज के साथ उसका समायोजन ठीक से नहीं हो पाता। इस परिस्थिति में परिवर्तन तभी लाया जा सकता है, जब छात्र को प्रारंभ से ही जन जीवन के समीप रखा जाए, उन्हें समाज की समस्याओं को नजदीक से समझने तथा उनके समाधान के लिए प्रेरित किया जाय। इसीलिए आजकल विद्यालय परिसर एवं समाज में संवाद को अधिक महत्व दिया जा रहा है। छात्र परिसर से निकलकर समाज के व्यक्तियों के बीच जायें, उनकी समस्याओं को जानने का प्रयास करें। उनकी समस्याओं को जानने के पश्चात् अपने ज्ञान का प्रयोग

समाज की समस्याओं के समाधान करने में करें। वर्तमान युवा पीढ़ी शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् श्रम से दूरी बना लेता है। आज का युवा छोटे-छोटे कार्यों को हेय दृष्टि से देखता है। जिससे देश में एक नया संकट उत्पन्न हो रहा है। भारत कृषि प्रधान देश है, यहां बेकारी की भयावह संकट उत्पन्न हो गया है।

वास्तविकता यह है कि उच्च शिक्षा पर प्रतिव्यक्ति जितना धन व्यय हो रहा है उसके बदले देश को उसका शतांश भी वापस नहीं मिल पा रहा है। एम. ए., एम.एस.सी. पास करके देश के लाखों रुपये अपनी पढ़ाई पर बर्बाद करने के बाद युवा-युवती दुकानों पर बैठते हैं या बाबूगिरी करते हैं। इन सबके लिए व्यक्ति नहीं, पूरी व्यवस्था जिम्मेदार है। जीवन के अनेक कार्यक्षेत्रों यथा परिवहन, कृषि, ऊर्जा, स्वास्थ्य आदि के बीच शिक्षा ही एकमात्र ऐसा क्षेत्र है, जहाँ मूल्यों में परिवर्तन की कुछ आशा की जा सकती है। इस परिवर्तन में राष्ट्रीय सेवा योजना सशक्त भूमिका निभा सकता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं को एक सशक्त मंच प्रदान करता है, जिसके माध्यम से छात्रों को अपनी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व विकसित करने का अवसर देता है। दिशाहीन और भटकाव की ओर बढ़ने के स्थान पर युवा पीढ़ी की ऊर्जा रचनात्मक एवं क्रियात्मक दृष्टिकोण की ओर उन्मुख करता है। महाविद्यालय युवा मन की पाठशाला ही नहीं अपितु उनकी वैचारिक स्फूर्ति एवं अंकुरण की पौधशाला भी होते हैं। प्रत्येक मानव में वैचारिक ऊर्जा का सतत प्रभाव होता है। आवश्यकता है उसे उचित दिशा-निर्देश एवं उसके मानसिक प्रक्षालन की। ज्ञान एक ऐसा विलक्षण साधन है, जिससे हम अपने मंतव्य का परिशीलन कर अपना गंतव्य भी सुनिश्चित करते हैं। शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिक का कथन है कि किशोरावस्था में जितनी अधिक शक्ति एवं स्फूर्ति होती है, उसकी पूर्ण ऊर्जा का उपयोग अध्ययन में नहीं हो पाता, इसलिए छात्र इस अतिरिक्त ऊर्जा का प्रयोग अध्ययन से विभिन्न कार्यों में लगाता है। इसलिए छात्रों में सृजनात्मक प्रवृत्ति एवं अनुशासित बनाये रखने के लिए समाज सेवा के कार्यों में लगाना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से इस धरा पर छात्रों की एक ऐसी पौध तैयार करना है, जो आगे चलकर पुष्पित एवं पल्लवित होकर समाज को सुगंधित और शीतलता प्रदान कर सके। साथ ही अपने को राष्ट्र एवं समाज के बहुमुखी विकास के लिए समर्पित कर सकें।

सन्दर्भ सूची :

- 1- महिला विश्व, 2009, स्त्री दृष्टि अध्ययन प्रबोधन केन्द्र, कौशिक आश्रम, पार्वती पुणे।
- 2- महिला विश्व, 2009, स्त्री दृष्टि अध्ययन प्रबोधन केन्द्र, कौशिक आश्रम, पार्वती पुणे पृष्ठ संख्या 102।
- 3- महिला विश्व, 2009, स्त्री दृष्टि अध्ययन प्रबोधन केन्द्र, कौशिक आश्रम, पार्वती पुणे पृष्ठ संख्या 103।
- 4- कुरुक्षेत्र नवम्बर, 2019, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली पृष्ठ 38।
- 5- कुरुक्षेत्र नवम्बर, 2019, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली पृष्ठ 39।
- 6- हिन्दुस्तान, गोरखपुर संस्करण, दिनांक 11 नवम्बर, 2019।